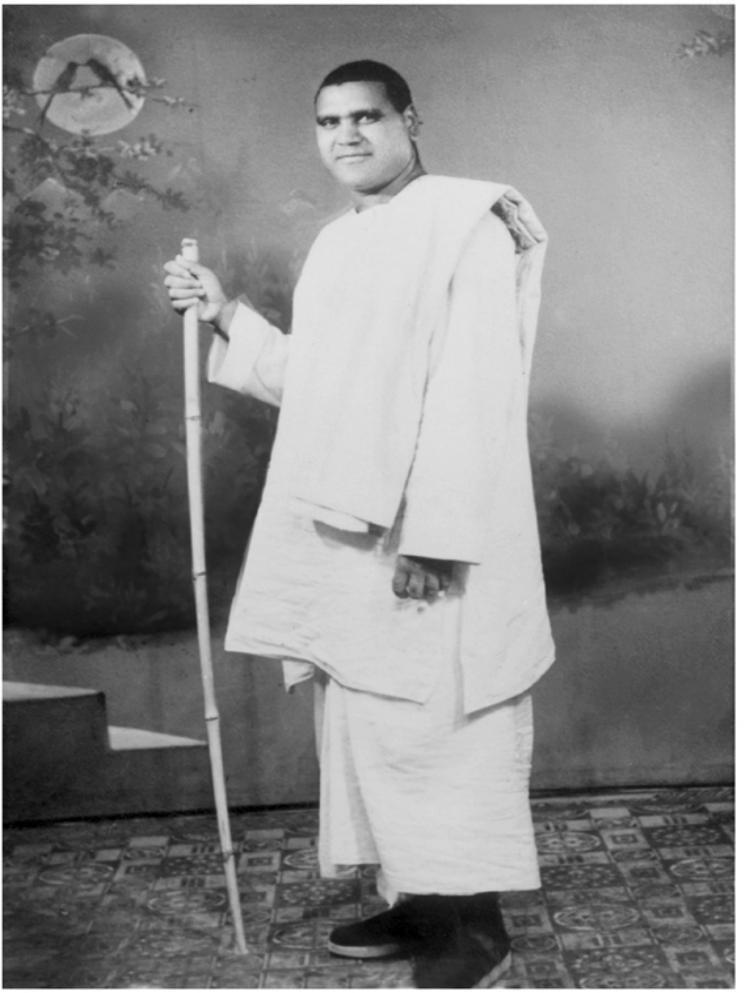

Bhram Rishi KrishanDutt Ji Maharaj Patrika May 2012

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! यह तेरी अलौकिकता है। प्रभु! चाहे मृत-लोक में रमण करने वाले प्राणी हों, जल में रमण करने वाले हों, सूर्य लोक में रमण करने वाले हों, चन्द्र लोक में रमण करने वाले हों, ध्रुव और बृहस्पति लोकों में रमण करने वाले हों, परन्तु हे प्रभु उन सबको आपका दिया हुआ जीवन है, आप उन सबका पालन-पोषण कर रहे हैं। हे परमदेव! हमें भी जीवन दो, हम जीवन चाहते हैं, प्रभु! हम उस सृष्टि में पहुँच जाएँ, उस अमूल्य निधि को जान जाएँ, उस राष्ट्र में पहुँच जाएँ जहाँ प्रभु! आपकी महिमा का सूर्य अस्त नहीं होता, प्रभु! यदि हमारे नेत्रों से, हमारी अन्तरात्मा से, हमारे अन्तःकरण से आपकी महिमा का अँकुर भी चला गया तो मानो प्रभु! हम मृत्यु को प्राप्त हो गए। हे प्रभु! हमें मृत्यु न दो, हम उन्नति चाहते हैं, सँसार में सतोगुणता चाहते हैं, आज उन पदार्थों का पान करना चाहते हैं जिनसे हमारा ज्ञान ऊपर आ जाए और हमें शुद्ध और पवित्र बनाता चला जाए, हे परमदेव! हमारा कल्याण करने वाले विष्णु! तू आ और हमारा कल्याण कर, आपको वेदों ने विष्णु कहा है।

हे परमदेव! कल्याण करने वाले विष्णु! आज तेरी महिमा का पात्र बनना चाहते हैं, हमें कुपात्र न बना। अपनी इस वेद-वाणी से हमें वंचित न कर, यदि हम आपकी वेद-वाणी से वंचित हो गए तो प्रभु! जानो हमारा जीवन मृत्यु को प्राप्त हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(चतुर्थ पुष्प प्रवचन दिनाँक 17 अप्रैल, 1985)

अंक : 476 समग्र अंक : 551
वर्ष : 40 समग्र वर्ष : 46

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	1
2.	अनुशासन की प्रतिभा	पूज्यपाद-गुरुदेव	3-20
3.	ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना		21-23
4.	यज्ञ	पूज्यपाद गुरुदेव	24-25
5.	Universal Truth	पूज्य महर्षि महानन्द जी	26-28
6.	Scientist of Mars who visited this earth about 120 times	पूज्य महर्षि महानन्द जी	29-30
7.	पुस्तकों की सूची, सूचना, दान इत्यादि		31-36

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों की अमृतवाणी को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से वैदिक अनुसंधान समिति ने बेवसाईट का शुभारम्भ किया है जिसका पताः

www.shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

अनुशासन की प्रतिभा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा महिमावादी है और उसकी महिमा इस महान जगत में एक-एक कण-कण में प्रायः हमें दृष्टिपात आती रही है। तो हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहे। क्योंकि जो भी मानव इस संसार में प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है चाहे वह किसी भी योनि के रूप में हो सर्वत्र प्राणी अपने में ज्ञान और विज्ञान को चाहते हैं। उनके हृदय में एक पिपासा लगी रहती है कि मैं परमपिता-परमात्मा की अनुपम सृष्टि को अपने मे निहारता चलू। आत्मा का जो ज्ञान है वह अनुपम है और आत्मा उस अपने सखा को अपने धारण करना चाहती है और आत्मा प्रत्येक प्राणी के अर्न्तहृदय में विद्यमान है चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाले हो, चाहे वह जल में रमण करने वाले हो, चाहे वह पृथ्वी पर रेंगने वाले हो परन्तु सर्वत्रा में प्राणी ज्ञान को चाहता है और अपने माता-पिता की प्रशंसा को चाहता है। क्योंकि वह जो परमपिता-परमात्मा है वह सर्वत्र का

माता और पिता कहलाता है। इसीलिए प्रत्येक मानव के अर्न्तहृदय में एक पिपासा रहती है कि मैं अपने ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाऊं और ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो करके उसकी सृष्टि को निहारता रहू। हमारे यहां प्रत्येक वेद-मन्त्र उस महान देव की महिमा का गुणगान गाता रहता है और प्रत्येक प्राणी के हृदय में उसकी पिपासा जागरूक रहती है क्योंकि ज्ञान कदापि भी वृद्धपन को प्राप्त नहीं होता, ज्ञान सदैव मानो एक रस बना रहता है। जो एक रस रहने वाला, न तो उसे वृद्धपन आता है और न उसे शिशुपन आता है, वह सदैव नवीन बना रहता है। तो हमें उस नवीनता के ऊपर विचार-विनिमय करके अपने ज्ञान और विज्ञान का जो एक अनुपम विषय है उसको अपने में धारयामि धारण करते रहे।

अनुशासन

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद-मन्त्र बहुत सी वार्ताएं प्रकट कर रहा था, जहाँ यह वाक् प्रगट कर रहा था वहां राष्ट्र के प्रति मानो देखो अपनी विचित्रता प्रगट कर रहा है। वेद-मन्त्र कहता है कि राष्ट्रदम ब्रह्मा वर्णस्वता मनाहा क्या प्रत्येक जो भी राष्ट्र में प्राणी-मात्र रहता है वह मानो देखो अपने में राष्ट्र उनका नवीन रहता है। जैसे मानव-समाज का राष्ट्र है इसी प्रकार तुम समुद्रों के आंगन में जब प्रवेश करोगे तो वहां भी एक मनु समाज है, वहां भी एक मानव-समाज है जिनके मन रहता है वह राष्ट्रम अपने में राष्ट्र की विवेचना करते रहते है। परन्तु एक पृथ्वी तुम्हें मण्डल पर नहीं नाना प्रकार के जो लोक-लोकान्तर है उनमें भी देखो राष्ट्र और सृष्टि है और वहां भी मानव गमन करता रहता है, वहां विज्ञान भी है, जलाशय भी है परन्तु सर्वत्र वहां विद्यमान रहता है। तो मानव सदैव यह चाहता रहता है क्या मैं अनुशासन में हूं। क्योंकि

अनुशासन प्रत्येक लोक-लोकान्तरों में अपना एक अनुशासन है। क्योंकि जैसे परमपिता-परमात्मा ने सृष्टि का निर्माण किया तो निर्माणवेत्ता ने मानो देखो यह भी एक नियम और अनुशासन में सर्वश सृष्टि रहती है। एक लोक दूसरे लोक की परिक्रमा करता है तो वह भी एक अनुशासन कहलाता है। तो इसी प्रकार प्रत्येक मानव मानव के समीप रहता है तो वह भी अनुशासित रहता है तो इसीलिए प्रत्येक मानव मानो वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू अपने में अनुशासन की प्रतिभा को अपने में धारण कर जिस समय अम्ब्रहा उसको धारण करने वाला ही मानो अपने में मानवीयता का ही मानो अपने में मनो-वस्तु को प्राप्त करता रहता है। तो आओ मुनिवरो! देखो आज का हमारा वेद-मन्त्र यह कहता है कि सार्वभौम जो प्राणी-मात्र है, मानव समाज है वह अपने में मन की आभा को धारण करता रहता है और उनके राष्ट्र है परन्तु अपने-अपने **राष्ट्रों में सबसे प्रथम जो राष्ट्र होता है वह मानव का अपना जीवन है।** अपने जीवन में यदि मानो वह अनुशासित रहता है तो उसका राष्ट्र जैसे मानो देखो एक राजा है और राजा स्वयं अनुशासित है, नियमित है तो उसका राष्ट्र भी अनुशासन नियमित होता चला जायेगा। यदि राजा के मनो में बिखरा हुआ बिखरापन रहेगा तो अनुशासन नहीं रहेगा तो प्रजा भी अनुशासित नहीं हो सकेगी। इसीलिए हमारा विचार यह कहता है, वेद का मन्त्र यह कहता है कि **प्रत्येक मानव को अपने में अनुशासित होना है** और प्रजा उसके अनुसार अनुशासित हो जाती है।

भगवान् राम का राज्यभिषेक

मेरे प्यारे! मैंने कई कालों से इससे पूर्व काल में मैं तुम्हें राम की चर्चा कर रहा था। राम ने बेटा! देखो यही कहा था लंका को विजय करने के पश्चात् क्या मैं अपने को अनुशासित तो कर

लूं। जब तक मेरा जीवन ही अनुशासित नहीं रहेगा रजोगुण, तमोगुण मेरा शान्त नहीं होगा तो मैं राष्ट्र का पालन नही कर सकता, मैं राष्ट्र को अनुशासित नहीं बना सकता। क्योंकि मेरा जीवन अनुशासित होना बहुत अनिवार्य है। तो बेटा! मैंने तुम्हें कई कालो में कहा है कि राम ने तप किया और अपनी इन्द्रियों को जय करके अपने आहार और व्यवहार को पवित्र बनाया और आहार व्यवहार को पवित्र बनाना उनको सात्विकता का एक नृत कराते हुए उन्होंने बेटा! देखो अपने राष्ट्र को, राष्ट्र को उन्नत बनाने के सुयोग्य जब बन गये, अनुशासित हो गये तो बेटा! देखो राष्ट्र को अपनाने का प्रयास किया। तप करने के पश्चात् मानो देखो वह तपो वनो को त्याग करके, भयंकर वनों को त्याग करके मुनिवरो! वह अपने राष्ट्र को अपनाने का उन्होंने प्रयास किया। राष्ट्र को अपनाने के पूर्व उन्होंने एक सभा की और सभा में मुनिवरो! देखो उन्होंने महाराजा-शिव, महाराजा-इन्द्र और मुनिवरो! देखो उन्होंने और भी नाना राजा जैसे अश्वपति और भी नाना ऋषि-मुनियों को निमन्त्रण दिया। जिसमें बेटा! देखो महर्षि-विभाण्डक, महर्षि-पारेत्वर ऋषि-महाराज, महर्षि-वशिष्ठ और महर्षि-विश्वामित्र, महर्षि-श्रृंङ्गि और मुनिवरो! देखो और भी नाना ऋषियों को उन्होंने जैसे महर्षि-पारावाह, वैश्मपायन और गाड़ीवान-रेवक और भी नाना-ऋषिमुनियों का बेटा! एक समूह एकत्रित हुआ जिसमें प्रव्हाण, शिलक और दालभ्य मेरे प्यारे! देखो सर्व ऋषि-मुनियों का उन्होंने समाज एकत्रित किया। उनमें राजा भी विद्यमान थे, माता-अरूनधति को विशेषकर उन्होंने निमन्त्रण दिया और महर्षि-भारद्वाज आदि ऋषि-मुनियों को निमन्त्रित करते हुए उन्होंने ऊर्ध्वा आसन प्रदान किए और आसान प्रदान करने के पश्चात उन्होंने कहा, कहो ब्राहा वृति ब्रह्मा वर्णसुतो और मुनिवरो! देखो और भी नाना-ऋषि-मुनि एकत्रित हो करके उन्होंने

कहा कहो राजन! आज कैसे हमें निमन्त्रित किया है। तो महाराजा-भरत ने यह कहा प्रभु! मेरी इच्छा यह है क्या मैंने एक राष्ट्र को बहुत समय तक मैंने प्रजा की सेवा की है और मैं प्रजा का सेवक बन करके रहा हूं और मैं राम का सेवक विशेषकर बन करके रहा हूं परन्तु मेरी इच्छा यह है क्या आप देखो राम का राज्यभिषेक होना चाहिए और राज्यभिषेक होने के पश्चात मानो देखो इसको अपनाये और प्रजा को मानो देखो जैसे हमारे पूर्वजों ने, हमारे महावृत्तियों ने प्रजा को नाना प्रकार का मार्ग दिया इसी प्रकार भगवान-राम देखो एक महानता का उपदेश दे और वह मानो अपना सन्देश दे करके प्रजा को ऊंचा बनाए। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा बहुत प्रिय, तो सब ऋषि-मुनि मानो अपने-अपने आसनो पर विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो महाराजा-शिव को उसका अध्यक्ष बनाया गया सभा का और शिव की अध्यक्षता में मानो देखो उनके विचार-विनिमय होने लगे। मेरे प्यारे देखो! सन्देश देने लगे जिसे कुछ उच्चारण करना हो और राष्ट्र के विषय में किसी को किसी प्रकार का आपत हो वह उच्चारण करो क्योंकि देखो वही राजा उसका प्रयत्न करेगा। मेरे प्यारे! राम एक आसन पर विद्यमान है, एक पर लक्ष्मण है और मुनिवरो! देखो भरत, शत्रुघ्न अपने भिन्न-भिन्न आसनों पर विद्यमान है, राजलक्ष्मीया भी उनके अपने-अपने आसनों पर विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो एक स्थान पर पुरोहित है और द्वितीय पर मानो देखो उनके राजपुरोहित विद्यमान है।

महर्षि-वशिष्ठ-मुनि महाराज के उद्‌गार

तो विराजमान हो करके बेटा! देखो सबसे प्रथम महर्षि-वशिष्ठ मुनि-महाराज उपस्थित हुए और महात्मा-वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने यह

कहा क्या मैं हे राम! तुम्हें राज्यभिषेक करता हूं और राज्यभिषेक पूर्व, राज्यभिषेक से पूर्व एक मेरा विचार है कि सबसे प्रथम राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होना चाहिए यदि राजा के राष्ट्र में **ब्राह्मणत्व** नहीं है, **बुद्धिमान देखो प्रजा नहीं है तो राष्ट्र को कोई भी उन्नत नहीं बना सकता।** मानो एक राष्ट्र पर मेरा विचार यह है कि राष्ट्र पर किसी भी प्रकार का मानो देखो अपने मनोवांछित उनमें विचार नहीं प्रस्तुत किया जाये। मेरे प्यारे! राम ने, सबने उसका देखो हृदय से स्वागत किया और उन्होंने कहा कि राजा के राष्ट्र में विद्यालय होने चाहिए परन्तु विद्यालयों में देखो वानप्रस्थ जितनी शिक्षा परम्परा से हमारे यहां नियमावली चली आई है क्या **वानप्रस्थ और ब्रह्मवेत्ता देखो वह राष्ट्र में शिक्षा देने वाले हो।** कन्या को जब भी शिक्षा दी जाये मेरी पुत्रियों को उनमें देखो वानप्रस्थ या जो गृह से उपरामता को प्राप्त हो चुकी है विदुषी वह विदुषी मानो देखो राष्ट्र को उपदेश दे। देखो वह देवी को उपदेश देने वाली हो, कन्या का उन्हें कन्या का मार्ग देना चाहिए कन्यान भूतम ब्रह्मा क्योंकि मेरी पुत्रियों का जो सद-मार्ग है वह पवित्र होना चाहिए। यदि पुत्रियों का मार्ग पवित्र नहीं होगा, देवियों का मार्ग पवित्र न होगा तो राष्ट्र में सन्तानों का जन्म नहीं होगा। महर्षि-वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने यह कहा कि तुम्हारे यहां विज्ञान होना चाहिए और वैज्ञानिकों को नाना प्रकार की प्रति श्रोत्रतियता प्रदान करनी चाहिए। जिससे देखो विज्ञान मानो पृथ्वी से लेकर के राजा के राष्ट्र में मानो सूर्यमंडलों तक की उन्हें सूचकता होनी चाहिए। इस प्रकार का विज्ञान हो जिससे लोकलोकान्तरों में राजा के राष्ट्र में यातायात बना हुआ होना चाहिए। जैसे एक समुद्र से पार राजा द्वितीय राष्ट्रो में भ्रमण करता है इसी प्रकार अपने वाहन के द्वारा तो विज्ञान भी इसी प्रकार का होना चाहिए।

वह लोक-लोकातन्तरों का गमन करने वाला हो और वहां का विज्ञान, वहां की वृत्तियां सब राजा के राष्ट्र में होनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो महात्मा-वशिष्ठ ने कहा ऐसे ब्रह्मचारी हो जो ब्रह्म का ही मानो देखो उनके द्वारा चलन रहना चाहिए। यह उस काल में होगा जब राजा का सन्देश प्राप्त होगा राजा की प्रतिभा का जन्म मानो देखो जब वायुमण्डल में प्रवेश करेगा और विद्यालयों में जिस प्रकार का उपदेश होगा और देखो कन्याओं के विद्यालयों में जब भी शिक्षक हो तो वह इस प्रकार का हो जिसकी तरंगे चंचलता को प्राप्त न हो। ब्रह्मचरियों के द्वारा ब्रह्म का ही चिन्तन हो और यदि चंचललता आ गई है तो देखो उनका जो ब्रह्मचर्य-व्रत है या वृत्तिया है उनके हृदय की तरंगे मानो वह तरंगित करती रहेंगी। मेरे प्यारे! इतना वाक् उच्चारण करके वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने यह कहा कि ब्राह्मण होना चाहिए राजा के राष्ट्र में मेरे प्यारे! देखो उन्होंने वह अप्रतम उच्चारण करके वह शान्त हो गये।

महर्षि-विश्वामित्र का उपदेश

ऋषि-विश्वामत्रि उपस्थित हुए और विश्वामित्र ने यह कहा कि प्रभु! यह राम का बड़ा सौभाग्य है कि भगवान-राम ने यह अपने में व्रत धारण किया कि मैं सबसे प्रथम तपस्या करूंगा क्योंकि तपस्या करके राजा देखो ब्रह्मवेत्ता बने है। इसी प्रकार मेरा देखो एक ही उपदेश रहता है क्या मेरे हृदय में जब महात्मा-वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने मुझे एक प्रेरणा दी और एक प्रेरणा मुझे कामधेनू से, एक गऊ से प्राप्त हुई और उसी गऊ के उस प्रेरणा से ही मानो प्रेरित हो करके मानो राष्ट्र को त्याग करके और भयंकर वन में गायत्री-छन्दों में प्रवेश कर गया। जब मैं वेद-मन्त्रों में अध्ययन में लग गया और

मेरा तप विशाल बन गया तो मानो देखो मैं बहुत से देखो मैं जानकारी में नाना प्रकार के मेरे में अभिमान की मात्रा बनी परन्तु जब ज्ञानी ब्रह्मवेत्ता ज्ञान की प्रेरणा देता है, वेद की प्रेरणा देता है, उस प्रेरणा के साथ मानो देखो मैं अपने में ब्रह्मवेत्ता बन गया और ब्रह्मवेता बन करके आज मैं अप्रतम ब्रह्मे अपने आत्मा मानो देखो मन, मस्तिष्क, मन-मस्तिष्क को मैं सदैव अपने में धारण किया क्योंकि अपने में ही प्रत्येक प्राणी समाहित हो रहा है। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो जब महात्मा-विश्वामित्र ने कहा कि मैं मानो देखो **जय बन गया और जय बनना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है वही ब्राह्मण होता है, ब्राह्मण में यदि देखो ब्राह्मण वही है जो तपस्या में परिणीत हो जाये।** मुझे ब्रह्मवेत्ता कह करके आचार्य ने मुझे जब पुकारा तो मेरा अन्तर्हृदय प्रसन्न हो गया परन्तु देखो उस अर्न्तहृदय के प्रसन्न होने पर मैंने तपस्या में तपस्यामग्ने मैंने तपस्या का अनुभव किया, क्या तपस्या का यह प्रभाव होता है। तो यह आज बड़ा सौभाग्य है कि जो अयोध्या-पुरी में जो राजा वह इतने तपस्वी कि वह बारह वर्ष का उन्होंने अनुष्ठान किया है इसके लिए हम सब प्रजा और जितने भी ज्ञानम-ब्रह्मे सब मानो देखो अपने में प्रसन्न है। मेरे पुत्रों! देखो विश्वामित्र यह उच्चारण करके और उच्चारण करके यह उनका एक वाक्य रहा क्या राजा के राष्ट्र में मानो देखो प्रत्येक प्राणी अपने में देखो **प्रसन्न रहना चाहिए और प्रसन्न वह रहता है जिस राजा के राष्ट्र में मानवीयता का मानो देखो मनन करने का समय प्राप्त होता है।** राजा स्वयं मनन करता है, प्रजा स्वयं मनन करती है, देखो राजा स्वयं यागिक होता है तो प्रजा भी स्वयं यागिक बना करती है। जब प्रजा में यागिकता का, यागिकतता की भावना होती है तो मानो देखो प्रत्येक वस्तु को ज्ञान से दृष्टिपात किया जाता है। तो वह राजा और प्रजा दोनों

पवित्रतता को धारण करके मानो देखो वहां प्रत्येक मानव एक दुसरे से प्रसन्न रहता है। तो इस प्रकार देखो उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में उद्दता नहीं रहनी चाहिए। उद्दता उस काल में आती है जब राजा के राष्ट्र में नाना-प्रकार के सम्प्रदायों का जन्म हो जाता है और सम्प्रदायों के जन्म का एक ही हमारे द्वारा एक ही निर्णय हुआ है कि राजा रावण के यहां नाना-प्रकार के सम्प्रदाय कहलाए गये क्योंकि राक्षस भी एक सम्प्रदाय थी। राजा रावण स्वयं मानो देखो अपनी इस राक्षस सम्प्रदाय को स्वीकार करते थे और उनके जो पुत्र थे, अहिरावण वह मानो देखो अनार्यता के राष्ट्र में देखो वहां भी वह उस अमृति-सम्प्रदाय को अपने में धारण करते थे। इसी प्रकार उनके पुत्र जो इन्द्रजीत कहलाते थे मानो मेघनाथ के नामम् ब्रह्मे वह इन्द्र को विजय करके उन्होंने देखो एक **ब्री-सम्प्रदाय** का जन्म उनके अन्तर्हृदय में हुआ उनके बहुत से अनुयायी बने और जो देखो जो भी सम्प्रदाय बनता है उस सम्प्रदाय में कोई न कोई मानो ऐसा नृत रह जाता है क्योंकि व्यक्ति की वह जो एक सम्प्रदाय, एक चलन होता है उसमें कोई न कोई त्रुटि रह जाती है। वह वेद से गुथा हुआ नहीं होता है और वेद से गुथा हुआ कोई भी मानव देखो वह मत नहीं होता वह तो मानो देखो अपने में सम्पूर्णता को प्राप्त किए रहता है और क्योंकि वह वेद नाम प्रकाश का है इसलिए प्रत्येक मानव प्रकाश के लिए वह सदैव रत्त रहता है। तो इस प्रकार महात्मा विश्वामित्र ने अपना उपदेश दे करके कहा कि राजा के राष्ट्र में प्रत्येक मानव एक दुसरे से ज्ञान में प्रसन्न रहे, ब्राह्मण समाज ब्रह्मा ब्राह्मण होने चाहिए जिससे सम्प्रदाय न पनप पाये और यदि सम्प्रदाय पनपेगी तो उसके द्वारा कुरीति आयेगी और कुरीती आयेगी तो मानो देखो राष्ट्र अन्धकार में चला जाएगा। मेरे प्यारे! देखो

यह महात्मा-विश्वामित्र ने अपना वाक् उच्चारण करके वह भी अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महर्षि-भारद्वाज-मुनि द्वारा मार्गदर्शन

मेरे पुत्रो! इतने में महर्षि-भारद्वाज-मुनि-महाराज उपस्थित हुए और भारद्वाज-मुनि ने कहा हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है क्या राजा के राष्ट्र में इस प्रकार का विद्यालय होने चाहिए जिन विद्यालयों से विज्ञान का जन्म हो और वह वैज्ञानिक मानो देखो अपने यन्त्रों का स्वतः निर्माण करने वाला हो और निर्माण करके सूर्य की ऊर्ज्वा के साथ में यन्त्रों का गमन करना होना चाहिए। क्योंकि सूर्य की ऊर्ज्वा के साथ में जब यन्त्र लोकों की परिक्रमा करता है मानो देखो वह लोकों को जानने वाले यातायातों को जन्म देता है इस प्रकार का विज्ञान राजा के राष्ट्र में होना चाहिए और राजा के राष्ट्र में धनुर्याग होने चाहिए क्योंकि धनुर्याग उसे कहते है, अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या राजा के राष्ट्र में राजकुमारों में होनी चाहिए और राजा स्वयं उस प्रकार के मानो देखो वह यन्त्रों को जान करके अपने राष्ट्र और मानवीयता को ऊंचा बनाने में लगे रहे। तो इस प्रकार देखो मुनिवरो! उपदेश दे करके और यह कहा कि राष्ट्र के माध्यम से ही विज्ञान पराकाष्ठा में होना चाहिए और धनुर्याग होना चाहिए। जिस मानो धनुर्याग के द्वारा प्रत्येक मानव देखो ब्रह्मचारी अपने में पवित्रता का संदेश दे करके अपने राष्ट्र को उन्नत और अपने राष्ट्र को पवित्र बनाने वाला हो। मेरे प्यारे! यह वाक उच्चारण करके उन्होंने कहा और विद्यालयों में देखो ब्रह्मचारी और आचार्य दोनों नैतिकता में तपे हुए होने चाहिए और जब नैतिकता में तपा हुआ समाज होता है तो उस समाज में मानो देखो कुरुतियों का जन्म

नहीं होता। इस प्रकार मुनिवरो! देखो महर्षि-भारद्वाज अपने वाक् उच्चारण करके वह भी अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महाराजा-अश्वपति की शिक्षा

इतने में बेटा! महाराजा-अश्वपति उपस्थित हुए और महाराजा-अश्वपति ने कहा क्या भगवन! मैं इस देखो बुद्धिमानों और विवेकी पुरुषों की सभा में मैं क्या उद्गीत गा सकता हूं मेरा तो यही है क्या राजा को राष्ट्र का अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए जो राजा यह चाहता है कि मैं अपने राष्ट्र को उन्नत बनना चाहता हूं, मैं प्रजा को सुखद बनाना चाहता हूं तो राजा को स्वयं अपने में मानों देखो कला-कौशल करके और अपने में कृषि का उदगम करके उस अन्न को पान करना चाहिए। क्योंकि मैं स्वयं उस अन्न को पान करता हूं समय-समय पर मानो, राजा के राष्ट्र में नाना प्रकार के यागों का विधान होना चाहिए जैसे वृष्टि-याग है, अश्वमेध-याग है, अजामेध-याग है और भी नाना जैसे वाजपेयी और अग्निष्टोम-याग है इस प्रकार के यागों का चयन होना चाहिए और राजा के राष्ट्र में देखो राजा को उस अन्न को ग्रहण करना चाहिए जिस अन्न से मानो देखो उसकी बुद्धि का पवित्र निर्माण हो क्योंकि **मन कि जो उत्पत्ति है वह अन्न के द्वारा होती है इसलिए अन्न पवित्र होना चाहिए।** मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने कहा क्या भारद्वाज-मुनि-महाराज यहां विद्यमान है **भारद्वाज-मुनि-महाराज देखो शिलस्थन अन्न को ग्रहण करते थे।** और उस अन्न को खरल बना करके अग्नि में तपा करके पान करते रहे मानो देखो राजा जब अपने राष्ट्र को त्याग करके भयंकर वन में तप करने चले गये है तो उनका अन्न मानो देखो यही रहा है कहीं वायु का सेवन है तो कही आपोमयी मानो देखो **अन्न का**

सेवन करते रहे खरल बना-बना करके उस अन्न से मुनिवरो! देखो मानव का मन पवित्र बनता है और मन के पवित्र बनने से देखो बुद्धि पवित्र बनती है और बुद्धि से मेधावी आती है और मेधावी से प्रज्ञावी आती है देखो वह वसुन्धरम ब्रह्मा मेधा से देखो वसुन्धरा आती है और वसुन्धरम बुह्मा मेरे प्यारे! देखा **प्रज्ञावी पुरुष** बन जाता है और राजा जितना प्रज्ञावी होता है उतना उसको ईश्वरीय विवेक होता है और जितना विवेक होता है उतना ही मानो देखो उसका राष्ट्र पवित्र होता है, वह ब्रह्मवेत्ता राजा होता है।

मेरे प्यारे! देखो राजा महाराजा-अश्वपति ने इस प्रकार अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में देवियां भी इसी प्रकार की राजलक्ष्मीया होनी चाहिए जिससे राजलक्ष्मीयां तपस्वी हो और मानो वह तपश्चर से अपनी संतान को जन्म दे सके। क्योंकि माता जितनी तपी हुई होती है माता का जितना भी देखो राष्ट्र में उनका राष्ट्रीयत्व जीवन पवित्र होता है वह माताएं मानो देखो पवित्रता को अपने में धारण करती उनका अन्न, अन्न पवित्र होने से सन्तान को पवित्र बनाया जाता है। मानो देखो याश्काचार्य ने आवृत्ति देखो वेद-मन्त्रों के माध्यम से इस प्रकार का व्यवधान किया है क्या माता देखो जो अपने गर्भ में अन्तरात्मा में, शरीर में जो मानो बाल्य पनप रहा है, शिशु पनप रहा है देखो माता उसका प्रायः दर्शन करने वाली बनती है। अपने गर्भ में जो माता अपने पुत्रो का, पुत्रियों का दर्शन करती है उन माताओं को देखो यहां संसार में व्रत्यम ब्रह्मा व्रते देखो उनको सन्तान को जन्म देने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो वह अमृतम राजा ने जहां अमृतमयी इन वाक्यों को उद्गीत रूप से गान-गाने से अमृतम ब्रव्हे देखो गान के रूप में उन्होंने इस प्रकार का उपदेश दिया तो मुनिवरो! देखो राम का

और सभी का हृदय पवित्रतता में परिणीत हो गया और यह कहा राजा अश्वपति ने कहा प्रभु! मैं स्वयं मेरी देवी और हम दोनों प्रातःकाल में कृषि का उद्गम करते है और उस अन्न को पान करके जब हम राष्ट्र के क्रियाकलापों को हम पवित्र बनाते है मानो देखो अन्नाम भूतम ब्रह्मे और राष्ट्र में याग करते है जिससे किसी प्रकार की त्रुटि न आ जाये। तो मेरे प्यारे! देखो उनका यह उपदेश जब प्रारम्भ रहा तो मुनिवरो! देखो वह वशिष्ठ इत्यादि प्रसन्न हुए और राजा ने यह कहा कि राजा स्वयं मानो देखो अपने शारीरिक और भौतिक जीवन को ऊंचा बनाए सबसे प्रथम देखो शारीरिक उन्नति करना राजा का कर्तव्य है। उसके पश्चात् वह देखो अमृतम जब शरीयणाम ब्रहे आत्मा का उत्थान हो जाता है आत्मा बलिष्ठ हो जाता है मानो देखो शारीरिक और देखो आत्मिक चेतना उसकी पवित्रता को धारण करती है इन्द्रियों पर जय होता रहे तो वह राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। मेरे प्यारे! देखो यह महाराजा-अश्वपति यह उच्चारण करके बोले कि राजा के राष्ट्र में राजा भी स्वयं ब्रह्मत्व को प्राप्त होना चाहिए और यदि राजा ब्रह्मत्व को प्राप्त नहीं होगा तो राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण भी नहीं होगा। तो इसीलिए उसका मन, मस्तिष्क मेधावी रहना चाहिए प्रज्ञावी और मुनिवरो! देखो वह मेधाम भूतम ब्रह्मा वसुन्धरम ब्रह्मे वसुन्धरावि रहना चाहिए। जिससे बेटा! देखो राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण जो कर्मकाण्डी उसके समीप आये वह भी यह उच्चारण अपने मन में विचारे कि मैं राजा के समीप कोई अशुद्ध वाक् न प्रगट कर जाऊं जिससे राजा मेरी अशुद्धियों को अपने में धारण करें और वह मुझे मानो किसी प्रकार का दण्डित कर दे। मेरे प्यारे! देखो राजा यदि अपने राष्ट्र में ब्राह्मणों का निर्वाचन करता रहा है। और वह राजा जो ब्राह्मण है परन्तु उसकी परीक्षा देखो

वर्ष में एक समय उनकी परीक्षा का समय आता है तो राजा के समीप उन राजा ब्रह्मवेत्ता होने चाहिए इसीलिए देखो राजा के राष्ट्र में ब्रह्मणत्व की आवश्यकता है।

मेरे प्यारे! देखो महाराजा-अश्वपति इस प्रकार का उपदेशम ब्रह्मा वाक् उच्चारण करके उन्होंने एक वाक् और कहा कि राजा के राष्ट्र में विद्यालयों में राजा को जाना चाहिए प्रत्येक विद्यालय में और वहां जा करके उन्हें यह धनन ब्रह्मा देखो कि उनके यहां किसी प्रकार की चंचलता तो नहीं है विद्यालयों में। मेरे प्यारे! देखो यदि ब्रह्मचारियों के समीप आचार्यो की चंचलता होगी या उनके द्वारा मानो देखो प्रतिशोध, काम, क्रोध लोभ हो गया होगा तो मानो देखो विद्यालय में ब्रह्मचारी कदापि भी ऊंचा नहीं बन सकेगा। चंचल भावना उत्पन्न हो गयी है तो वह उनके विचारों के अन्तःकरण में स्पर्श होते रहे है, और उनके विचारों में इस प्रकार राजा के राष्ट्र में यन्त्र होने चाहिए वह यन्त्र विद्यालयों में रहने चाहिए। मुनिवरो! देखो जैसे कोई अशुद्ध चंचलता आचार्य में आ जाये या ब्रह्मचारी में आ जाये उनके चित्र मुनिवरो! देखो उसी चंचलता को लिए हुए भाव को ले करके ही मानो देखो वह चंचलता के विचार जब आते है तो बेटा! उनका बहिष्कार करना चाहिए। मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं मैं यह उच्चारण कर रहा हूं यदि समाज को ऊंचा बनाना है अन्यथा राजम ब्रह्मा राजा को ऊंचा बनाना चाहिए, राजा देखो अपने यहां विज्ञान और मानवीयता के लिए ज्ञानम भूतम ब्रह्मा मेरी पुत्रियों का जीवन पवित्रतता में राजा के संरक्षण उनके ज्ञान-विज्ञान के द्वारा होने चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का महाराजा अश्वपति ने अपना वाक् प्रगट करते हुए उन्होंने कहा कि अपने शान्त और इन्द्रियों पर विजय और बौद्धिक और शारीरिक

सर्वत्रता का उन्नत होना राजा का कर्तव्य है। मेरे प्यारे! वह अपने कक्ष में विद्यमान हो गये। विद्यमान हो करके मुनिवरो! देखो अपना-अपना उन्होंने मन्तव्य प्रगट किया और एक ही वाक् को ले करके सम्भूति ब्रह्मा वर्णोसुते।

महर्षि-प्रवाण-जी की प्रसन्नता

इतने में बेटा! महर्षि-प्रवाण-जी उपस्थित हुए और महर्षि-प्रवाण ने यह कहा है क्या समय वेताम् समाव्रतम क्रतम दप्तपय वहा क्या हे राजो, हे प्रजाओं! आज हमारा यह बड़ा सौभाग्य है जो राम जैसे सखा मानो उनका राज्यभिषेक होने जा रहा है और हमारा यह सौभाग्य है क्या ऐसे तपस्वी राजा जो मानो देखो बारह वर्ष का अनुष्ठान करने के पश्चात् उन्होंने देखो इस राष्ट्र, अपनी वेदि को अपनाने का प्रयास किया है। हमारा यह बड़ा सौभाग्य है, हम बड़े सौभाग्यशाली है प्रजा अपने में बड़ी सौभाग्यशाली रहती है जब इस प्रकार के तपस्वी राजा हो क्योंकि तपस्वी तपस्वी का ही विचार-विनिमय करता रहता है और वह तपस्वीयों की रक्षा करता रहता है राजा, तो इस प्रकार का राजा के राष्ट्र में आपत्ति ही नहीं होता जो राजा स्वयं तपस्वी होता है वह मानो देखो उस राजा के राष्ट्र में आपत्ति काल नहीं आता। आपत्ति काल जब आता है जब राजा स्वयं अपने में देखो राजा नहीं रहता वह दूसरों की प्रजा के वैभव को अपने में संग्रह करने वाला बनता है। तो प्रजा में मानो उसके प्रति रक्त भरी-क्रान्ति आ जाती है और देखो प्रजा मंगलम ब्रह्मे वह रक्तमयी क्रांति आ करके देखो राष्ट्रीयता नष्ट होने के लिए तत्पर हो जाती है। तो इस प्रकार मानो देखो राष्ट्रम ब्रह्मा क्रतम देवो तो राष्ट्र देखो अपने में भ्रष्ट हो जाता है। इसीलिए राजा, जब तपे हुए होते

है और राजा इन्द्रियों पर विजय करने वाले होते है और स्वयं अपने में कृषि का उद्गम करके जैसे महाराजा अश्वपति ने कहा है ऐसे राजा मानो देखो अपने को अपनी प्रजा को ऊंचा बनाते है, तपस्या में परिणीत कर देते है मानो देखो इस प्रकार वह उच्चारण करते हुए वह भी अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महर्षि-अंगिरस-मुनि-महाराज का आशी-वचन

मेरे प्यारे! देखो अंगिरस-मुनि-महाराज ने यह कहा कि मैं तो पूर्व ही यह कहता रहता हूं कि देखो यहां तपश्चर होना चाहिए। जब हमने देखो **श्रृङ्गी ने और हमने, दोनों ने याग किया था पुत्रेष्ठि** तो उस समय कौशल्या ने हमे दक्षिणा प्रदान की थी और वह दक्षिणा में हमने यही स्वीकार किया था क्या हमें तो मानो देखो ऐसे सन्तान को जन्म देने की प्रतिज्ञा करो, संकल्प करो जिससे देखो वह राष्ट्रीय ऐश्वर्यो मे न परिणीत हो जाये। वह कौशल्या ने हमें दक्षिणा में प्रदान की और वह स्वयं तपस्वी बनी। क्योंकि माता तपस्वी होगी तो देखो माता के गर्भ से महान पुत्रों का, तपस्वीयों का जन्म होगा और यदि माता तपस्विनी नही होगी सन्तानों का जन्म होगा वह सन्तान देवियों के श्रृंगारों को हनन करने वाला बनेगा। मानो देखो राष्ट्र में, समाज में अराजकता आ जायेगी और समाज मानो देखो अपवित्र बन जायेगा। मेरे प्यारे! यह महर्षि ने, अंगिरस ने यह अपनी चर्चाएं की। अंगिरस ने कहा क्या मेरे विचार में तो यह आता है कि जितने भी पाण्डित्व है, वह तपस्वी है वह याग करते समय देखो संकल्प कराते चले जाये, दक्षिणा में देते चले जाये कि हम यह चाहते है, हम देखो तुम्हारे गृह को उज्ज्वल और प्रकाश में लाना चाहते है। मानो देखो इस प्रकार के वाक उच्चारण करके उन्होंने कहा राम जैसे सखा का यह जन्म है और यह हम बड़े सौभाग्यशाली

जो इतना महान तप करने के पश्चात् वह अपनी राष्ट्रीयता को अपनाने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार बेटा! उच्चारण करके वह अपने ही आसन पर विद्यमान हो गये।

मेरे प्यारे, यह तो ऋषि-मुनियों का अपना-अपना विचार है उन्होंने अपना-अपना राष्ट्रीयता और मानव-समाज के लिए उन्होंने अपना-अपना उपदेश दिया और अपने-अपने वाक प्रगट किए बेटा! देखो इसमें बहुत से विचार रह गये है। विचार केवल यही है कि राजा, राष्ट्र जब आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में राष्ट्र की चर्चाए आ रही थी और वह राष्ट्र की चर्चाएं ये कि राजा अपने में जय हो और परमात्मा का चिन्तन करने वाला हो क्योंकि परमात्मा निरभिमानी है इसलिए राजा को निरभिमानता से लेना चाहिए। राजा इस संसार को धारण कर रहा है इसीलिए वह अपने सर्वत्र राजा को भी देखो, अपने में राष्ट्र को, राजा को धारण करना चाहिए और राजा स्वयं और मानो देखो स्वयं प्रजा से कुछ नहीं चाहते वह स्वयं मानो देखो इसी प्रकार राजा अपनी कुशलता में पूर्णता का अपना परिचय देता रहे। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो उन्होंने उच्चारण करके ऋषि-मुनियों ने अपने विचार, देखो अपने-अपने विचार देखो सब शान्त कर दिये। उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में समय-समय पर ब्रह्मवादियों की चर्चा होनी चाहिए जिससे राजा में देखो ब्रह्मवेत्ता बनने की क्षमता बनी रहे और ब्रह्म का उपदेश बना रहे। तो इस प्रकार विचार मेरे प्यारे! देखो अपने में महानता को ले जाते है और राष्ट्र और समाज दोनों पवित्र बनते है। उस समाज में मुनिवरो! देखो प्रत्येक गृह अपने में मुनिवरो! देखो सामाजिक और जिस सामाजिक आत्मिक उन्नति करता हुआ समाज अपनेपन को प्राप्त हो जाता है। तो इस प्रकार का मुनिवरो! देखो अपना-अपना मन्तव्य दे करके ऋषि-मुनि अपने अपने कक्ष में विद्यमान हो गये और विद्यमान हो करके अपने में

सान्तवना को प्राप्त होते रहे। तो आज बेटा! देखो मैं कोई व्याख्यता नहीं हूं मैंने तुम्हें वह विचार दिए है कि सभा में, राष्ट्रीय सभा में अपने अपने प्रजा के विचारों को राजा को अपने में धारण करना चाहिए। उनके विचारों को अपने विचारों से सन्तुलना करके अपने को ऊंचा बनाना चाहिए। बेटा! चाहे वह वैज्ञानिक विचार हो चाहे वह देखो वह मानो चाहे ब्रह्मज्ञानिक विचार हो, चाहे राष्ट्रीय अनुशासन के विचार हो, चाहे इन्द्रियों को जय करने के विचार हो उन सर्वत्रतता को राजा को समय-समय पर अपने राष्ट्र में अपना करके उनमें बेटा! देखो समाज सदैव नवीन बनता है, विचारों से नवीनता को प्राप्त होता है और वेदज्ञ बन करके अपने को प्रकाश में ले जाता है।

तो यह है बेटा! आज का वाक। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें आगे की शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। क्योंकि यह तो उनके यहाँ समय-समय पर विचार होते रहते थे और उन विचारों का जो समूह है वह एक महानता में गमन करता रहा है। बेटा! तो आज का विचार क्या कि हम मुनिवरो! देखो **अपने में महान बनने के लिए नाना प्रकार के विचारों को अपनाये और वह परमात्मा से प्रत्येक विचार सुगठित होना चाहिए जैसे मानव की प्रत्येक इन्द्रिया मन से सुगठित होती है** तो उनका मन इस शरीर रूपी रथ का सार्थी कहलाता है। इसी प्रकार अपने सार्थी से बन्धा हुआ प्रत्येक इन्द्री जय बन करके बेटा! अपने को प्राप्त हो जाता है। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का विचार समाप्त। अब वेदो का पठन-पाठन।

अच्छा भगवन्!

दिनांक 16-1-1992

स्थान : मकनपुर, गाजियाबाद।

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

यजु० ३० ।३॥

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है॥
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण-कर्म-पदारथ, प्रेमसिन्धु हमको दीजे॥

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

यजु० १३ ।४॥

तू ही स्वयं-प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य-चन्द्रादिक को, तू रचता और टिकाता है॥
पहले था अब भी तू ही है, घट-घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी॥

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मैदेवाय हविषा विधेम॥३॥

यजु० २५ ।१३॥

तू ही आत्मज्ञान बलदाता सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण-शरण में आकर, भव सागर तर जाते हैं॥
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु! तुझसे लगन लगाने में॥

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ॥
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

यजु० २३।३॥

तूने अपनी अनुपम माया से, जग-ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है॥
अपने हिय-सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति-भाव से भेंटें लेकर, शरण तुम्हारी आते हैं॥

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

यजु० ३२।६॥

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर, निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने, कौशल अलख जगाया है॥
तू ही विश्वविधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन्! तेरे भजनामृत का पान करें॥

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

ऋ० १०।१२१।१०॥

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सब में तू ही समाया है।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है॥
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का, तूने साज सजाया है।
धन-दौलत भरपूर दीजिये, यही भक्त को भाया है॥

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

यजु० ३२ /१०॥

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है॥
भक्तों को इस भव बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु! सर्वकाल का ज्ञाता है॥

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥८॥

यजु० ४० /१६॥

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभो सबका सिरजन हार तू ही।
रसना निशिदिन रटे तुम्हीं को मन में बसना सदा तू ही॥
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना हरदम दयानिधान।
अपने भक्त जनों को भगवन् दीजे यही विशद् वरदान॥

॥ ओ३म् ॥

यज्ञ

मुनिवरो! जब हम यज्ञ के उद्देश्यों को, उसकी परम्परा को विचारते हैं तो हमें प्रतीत होता है कि यज्ञ कितने महान् कष्टों से प्रारम्भ होता है। वेद ने कहा है कि एक मानव परमात्मा का चिन्तन करता है वह भी सुन्दर यज्ञ कर रहा है। एक मानव परोपकार में संलग्न है वह भी सुन्दर यज्ञ कर रहा है। हमारे यहाँ कोई अतिथि आता है उसका यथाशक्ति आदर करना, भोजन आदि कराना भी यज्ञ कहलाता है। जहाँ हम राष्ट्र के हित के लिए कार्य करते हैं, प्रजा को सुखी बनाने का प्रयत्न करते हैं वह भी एक प्रकार का यज्ञ कहलाता है। जहाँ-जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञों की परिक्रियाएँ चलती हैं वहीं सुन्दरता छा जाती है। जितने हम सुन्दर काम करते हैं वे यज्ञ कहलाते हैं। एक सुन्दर यज्ञ वह भी होता है जिसमें ब्रह्मा, अध्वर्यु, उद्गाता होता है और यजमान का चुनाव होता है और चुनाव करके सुन्दर यज्ञ कर्म करते हैं तो उसकी परिक्रियाएँ सुन्दर होती है। वह मानव की आयु को सुखी बनाने वाला होता है। वहाँ सुख और शान्ति के नवीन अँकुर उत्पन्न होते हैं। वहाँ बेटा! देवताओं का पूजन भी होता है। पति-पत्नी एक स्थान में विराजमान होते हैं और यजमान बनते हैं, तपस्या के साथ अपने अपने जीवन को व्यतीत करते हैं। जैसे अग्नि में परमाणु तपते हैं और तप कर सूक्ष्म बन जाते हैं और सूक्ष्म बन करके महान् शक्तिशाली बन जाते हैं। इसी प्रकार हे यजमान! तू अपने जीवन को तपस्वी बना। जितनी तेरी मानवता सूक्ष्म होती चली जायेगी उतना ही तू शक्तिशाली बनता हुआ ब्राह्मणों का पूजन करता हुआ तू विशाल बन सकता है।

परन्तु मैं तो प्रत्येक शुभ कार्य को यज्ञ कहा करता हूँ। एक मेरी पवित्र माता नियमानुकूल अपने गर्भ से लेकर के जीवन अग्रणों (आरम्भिक

काल से लेकर गुरुकुल जाने तक) तक अपने प्यारे पुत्र की रचना करती है वह भी सुन्दर यज्ञ कर्म कहलाता है। इसी प्रकार एक राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाने की पवित्र धारणा को लेकर के आगे चलता है और प्रजा को सुखी बनाने का प्रयत्न करता है वह भी एक सुन्दर यज्ञ कर्म करता है। परन्तु वह कौन-सा यज्ञ है जहाँ इस लोक में और परलोक दोनों में सुख प्राप्त होता है। यह यज्ञ जिसमें ब्रह्मा का चुनाव होता है, यजमान का चुनाव होकर के यजमान की पत्नी कहती है ''हे यज्ञ पते'' हे यज्ञ को रचाने वाले यजमान मैं तेरे समीप हूँ। आज तू ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ, त्याग तपस्या के द्वारा, पृथ्वी में आसन लगाता हुआ यज्ञ कर्म को पवित्र बना। तेरी प्रवृत्तियों से ही हे देव! यह यज्ञ कर्म हमारा श्रेष्ठ बन सकता है। जब इस प्रकार की प्रार्थना और विनय की जाती है तो उस समय यज्ञ कर्म सफल होते हैं। अन्यथा सफल नहीं हो पाते।

मेरे भद्र आचार्य जनो! यज्ञ वह होता है जिसमें किसी भी प्रकार की कामना उत्पन्न नहीं होती। जब किसी भी प्रकार की कामना उत्पन्न नहीं होती तो वह निष्काम कर्म कहलाता है। यज्ञ में ऋत्विज कौन होता है? जो ऋत को जानते हैं। वह ऋत क्या है? ''ऋतम् ब्रह्म ऋतम् या ब्रह्मणी वाला घृते निराधन्नम् ब्रह्मणे वाचा देव ऋतव प्रभा गति नश्चताः।'' मुनिवरो! आचार्यों ने कहा है कि ऋत वह कहलाती है जो प्रकृति में सूक्ष्म तन्तु होते हैं जैसे मेघ मण्डलों में विद्युत अपना प्रकाश देती है। उस विद्युत से भी सूक्ष्म परमाणु होते हैं। सूक्ष्मत्व का नाम ऋत कहलाता है और यज्ञशाला में वही ऋत्विज बनने का अधिकारी होता है जिसके विचार विस्तृत हों, जो अन्न से पवित्र हो, शारीरिक और मानसिक विचारों में उसकी धारणा हो, ब्रह्मचर्य को पालन करता हुआ वह श्रेष्ठतम हो।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व प्रवचन दिनाँक 19 जुलाई, 1966)

॥ ओ३म् ॥

Universal Truth

Today I shall speak on two subjects - Universalism and Nationalism. Today when my respected Gurudeva was reciting the Vedas, a sweet description was being heard of the living beings on the Moon on the Jyestha (Antares) planet and on Mars, I do not want to go in detail of all the living beings. My revered Gurudeva stated a Universal truth when he said that living beings must be found where the five elements exist. Whether in this world or in any other, if the five elements viz. (1) earth, (2) water, (3) fire, (4) air and (5) ether do exist, there must be the presence of living beings. This is a universal truth -- this is Vedic truth, this cannot be refuted.

Today I have heard through my subtle organs that the man of today says that there is no life on the moon. But what has the man of today done there ? Our science in tradition says that Nariantak, the son of King Ravana, had a book of Apariti Science and he had also a manuscript which was called 'The apiriti travel to the Moon. 'But unfortunately all those books have been consumed by fire, and their authors also have all expired. I am ready to question what the man of today has known of Science. The man of today seems to feel that if he goes on progressing in science in this way he will

surpass God. But man must drive out this thought from his mind. Today man easily becomes an atheist, but in atheism also he must take his stand somewhere. No doubt he says that all the world has come out of Nature, but he must also agree that there is some source of Nature also. Moreover, Nature is totally devoid of knowledge, and hence some other source of knowledge also must be accepted.

The science of today has prepared a machine to reach the moon, but it has not been able to put consciousness in that machine. When it will do so, it may be said that it has surpassed God. But it will never be able to do so.

The man of today is saying that he went to the moon and found no life there, but he must know that as yet he has approached only the northern part and that there is a certain Krothkut line in that part, which man has not been able to cross as yet. When he will proceed further, he will find the existence of life there. As far as man has gone yet, there exist some particles of the air element only, and on going further particles of the water element will also be found. But it must be understood that there is a difference between the life on the earth and the life on the moon. There is the predominance of the earth element and the air element here on the earth, but on the moon there is the predominance of the water element and the air element.

According to the Vedas and other scriptures, the life there is said to belong to the Pishach race.

Further it may be stated here that the man of this earth, full of the earth element in him, may not be able to live for more than six months on the moon, because he may get desiccated due to the predominance of the air element there. If, however, man may carry with him the essence of the required earthly elements there, he may be able to live, otherwise not. I may be prepared to state that in future man may be able to travel on the Moon, but as far as the other aspects of living are concerned such as agriculture, trade, erecting of buildings and opening of offices, these things will not be possible there for the man of the earth.

Pujay Mahrishi Mahanand Jee.

Pravachan-Dated 22 Aug. 1969
Place : Krishna Hall, Jorbagh
New Delhi

॥ ओ३म् ॥

Scientist of Mars who visited this earth about 120 times

:

Today I want to speak something about Mars. Man should go to Mars. Much of the life streams there on Mars, such as the atmosphere, the food-stuff etc. are similar to those of the Earth, because there the earth element is in abundance. But the knowledge of science of the inhabitants of that planet is far superior to that of the inhabitants of the earth. There is a scientist named Somnanik in Mars. One of his machines named Sanbhuti has been travelling to this earth and another named Sombhawali has been travelling both on the land and the water of this earth, Those machines are so powerful that the scientists of this earth will not be able to make such machines for even next hundred years. There is another scientist of Mars named Saunik. His machines with scientists have come, moved round this earth, gathered information and turned back some 120 times.

But I need not speak much on this, except that the scientists of Mars are great. Now, I want to say something about the scientists of the Moon. On the Moon there is a scientist named Swanin He sends his machines to the Shanakriti planet and has established contact of the Moon with that planet. His machines are also capable of coming to this earth. But ! need not go in details regarding this.

I am telling all these so that the scientists of the earth may realise that they are not the only scientists. All such spheres of this universe which are inhabited by living beings have such beings in them who are well versed in material science and spiritual science as well. Even on this Earth, there have been very great scientists from very early times, for example in the time of king Hiranyakashyap, science was so advanced that Prahlad the son of Hiranyakashyap reached the Polar sphere. How Prahlad went there is another matter which I may discuss some day if my revered Gurudeva allows me to do so.

I was just talking on the subject of science. We must know that Nature begets disposition. Just as when a child approaches its mother, streams of milk automatically come out of her, similarly when you will know the ingredients of Nature and will be able to combine them with one another, kind mother Nature will let out her secrets to you and you will be able to make various sorts of machines. In the machines used today for going to the moon, there are certain valuable ingredients. But there are even more valuable ingredients known as Swanagriti Aswani and Trigan Anath, which when combined together will produce electricity having waves thousands of times more powerful than those of the electricity now in use.

Pujay Mahrishi Mahanand Jee.

Pravachan-Dated 23rd Aug. 1969
Place : Arya Bhawan, Jor Bagh
New Delhi

डॉ० धनवन्तरी त्यागी एवम् धर्मपत्नी डॉ० साक्षी त्यागी

डॉ० निरंजन सिंह त्यागी निवासी ग्राम सूदना, हापुड़, उ०प्र० ने अपने प्रिय पुत्र डॉ० धनवन्तरी त्यागी के शुभ विवाह आयुष्मती डॉ० साक्षी त्यागी के पुनीत अवसर पर 2100 रुपये का सात्विक सहयोग प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है जिसके लिये समिति हृदय से त्यागी जी के परिवार का आभार प्रकट करती है। नवदम्पत्ति के सुखमय जीवन और सर्वतोन्मुखी समृद्धि लिए तथा समस्त परिवार के शान्तिमय जीवन के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी०)

दान

वैदिक अनुसंधान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक श्रद्धालू महानुभावों ने अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया हैः

1.	श्री गौरव त्यागी, हापुड़	250 रुपये
2.	श्री ब्रजपाल तौमर, मेरठ	250 रुपये
3.	श्री नीरज त्यागी, मेरठ	1100 रुपये
4.	श्री लोमेश त्यागी, मेरठ	500 रुपये
5.	श्री गमदूर सिंह रूप राय, फफून्डा	151 रुपये
6.	श्री राजपाल भामोरी	100 रुपये
7.	श्री नीलम शर्मा, लोदी कॉलानी नई दिल्ली	1100 रुपये
8.	श्री मदनपाल त्यागी, बरखंडा	60 रुपये
9.	श्री रूद्रप्रताप सिंह (दादी, संतोष त्यागी), मेरठ	1101 रुपये
10.	श्री मलखान सिंह दाहा	21 रुपये
11.	श्री यशपाल राठी, सेनीपुर, मुजफ्फर नगर	651 रुपये
12.	श्री मंगल सेन, फफूंडा, मेरठ	500 रुपये
13.	श्री योगेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर	150 रुपये
14.	श्रीमती देवनन्द्री संगवान, अरनावती रोहतास	1508 रुपये
15.	श्रीमती कृपा देवी रसना	101 रुपये
16.	श्रीमती सुम्रिता, बागपत, मेरठ	51 रुपये
17.	श्री हरिशंकर भारद्वाज	100 रुपये
18.	श्री हरिराम गुप्ता, वजीरपुर, दिल्ली	5100 चैक
19.	श्री रतन सिंह, फफूंडा, मेरठ	100 रुपये
20.	श्री जय प्रकाश त्यागी	500 रुपये
21.	श्री अनुप कुमार, दिल्ली	101 रुपये
22.	श्री भारत कुमार, मेरठ	501 रुपये
23.	श्री नरेन्द्र त्यागी, चमरावल	105 रुपये
24.	श्री पवन कुमार सरोही, हापुड़	501 रुपये
25.	श्री राज किशोर त्यागी, मकनपुर	250 रुपये
26.	श्री महर सिंह, इक्ताहरपुर, मेरठ	101 रुपये
27.	श्री अनिल त्यागी, मेरठ	1100 रुपये
28.	श्री देवेन्द्र गुप्ता	100 रुपये
29.	श्री रतन सिंह, फफूंडा	100 रुपये

30. श्रीमती कमला देसवाल, पुराना राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1100 रुपये
31. श्री अशोक नरिशमान, करोलबाग, नई दिल्ली	1100 रुपये
32. श्री जीत सिंह धुन्धी, आजमपुर	100 रुपये
33. श्री महेश त्यागी, गाजियाबाद	1100 रुपये
34. श्री फकीरचन्द त्यागी	101 रुपये
35. डॉ० निरंजन सिंह त्यागी, सूदना, हापुड़	2100 रुपये
36. श्री प्रियांश त्यागी	500 रुपये
37. श्री सत्या त्यागी रामप्रस्थ	1100 रुपये
38. श्री राजेन्द्र त्यागी, बड़ढ़ा	2001 रुपये
39. श्री अनिलकुमार नय्यर, मलेशिया	501 रुपये
40. श्रीमती चढ्ढ़ा, नोएड़ा	250 रुपये
41. श्री राजेश्वर, पिलाना, बागपत	50 रुपये
42. श्री एस. आर. साम्भी, चण्डीगढ़	250 रुपये
43. श्री तुषार गौड़, फरीदाबाद (हरियाणा)	500 रुपये
44. श्री यादराम, भामोरी	100 रुपये
45. श्री इन्द्र देव त्यागी, निगम देव त्यागी खन्दावली	100 रुपये
46. श्री गजेन्द्र कुमार, डून्गर	100 रुपये
47. श्री मेवान सिंह, बागपत	50 रुपये
48. श्री मदनपाल त्यागी, बरखंडा	50 रुपये
49. श्रीमती देवांसी हरीश किरण, पांडवनगर, दिल्ली	201 रुपये
50. श्री सीता राम, शास्त्रीनगर, ऐलम	100 रुपये
51. श्री कृष्ण पाल, किटोली, मेरठ	100 रुपये
52. श्री यज समिति, नंगोला	201 रुपये
53. श्री देव प्रिया त्यागी और प्रीति त्यागी, खन्दावली, मेरठ	101 रुपये
54. श्री जयप्रकाश और शारदा, कालकाजी, नई दिल्ली	400 रुपये
55. श्री अरूण तुली, लाजपत नगर, नई दिल्ली	2100 रुपये
56. श्रीमती शांति देवी अबरोल, लाजपत नगर, नई दिल्ली	1100 रुपये
57. श्री कमल सिंह, शिवपुरी	100 रुपये
58. श्रीमती राजबाला वर्मा, मुजफ्फरनगर	500 रुपये
59. डॉ. राजेन्द्र त्यागी, रहदरा, मेरठ	251 रुपये
60. श्री कृष्णपाल और समय सिंह	51 रुपये
61. श्री प्रमोद और सरदार सिंह	51 रुपये
62. श्री ब्रहपाल और प्रखलाल, बागपत	51 रुपये
63. श्री शीश पाल वीरे पाराशर, बागपत	51 रुपये

64. श्री नरोत्तम सिंह, इलम सिंह पाराशर, बागपत	101 रुपये
65. श्री रविन्द्र और महावीर पाराशर, बागपत	101 रुपये
66. श्री मनीश तोमर	50 रुपये
67. श्री विपिन त्यागी, सठेड़ी, मुजफ्फर नगर	151 रुपये
68. श्री अनुज सोनबीर पाराशर, बागपत	101 रुपये
69. श्री राजपाल ओर जीवन पाराशर, बागपत	51 रुपये
70. श्री नवाब और जिले	51 रुपये
71. श्री धर्मवीर और इन्द्र पाराशर, बागपत	51 रुपये
72. श्री तेजपाल, इन्द्र	51 रुपये
73. श्री रामेश्वर और मुंशी पाराशर, बागपत	51 रुपये
74. श्री मेहताब और अटल सिंह पाराशर, बागपत	51 रुपये
75. श्री बीर सिंह, फफून्डा, मेरठ	500 रुपये
76. श्री त्रिलोक, फफून्डा मेरठ	100 रुपये
77. श्री ओम पाल इलम चंद्र पाराशर, बागपत	51 रुपये
78. श्री कृष्ण पाल और रती राम	101 रुपये
79. श्री नारायण और मामराज पाराशर, बागपत	101 रुपये
80. श्री प्रकाश वीर और कनक सिंह पाराशर, बागपत	101 रुपये
81. श्री सुभाष खारदिया	51 रुपये
82. श्री प्रेमपाल और कर्तार सिंह	51 रुपये
83. श्रीमती खुशबु त्यागी, बरनावा	500 रुपये
84. श्री जगदीश, शाहपुर, मेरठ	100 रुपये
85. श्री अमन सिंह आर्या, मेरठ	50 रुपये
86. श्री सुधा शर्मा, पटेल नगर	500 रुपये
87. श्री कुंवर पाल, मटोर, मेरठ	101 रुपये
88. श्री अक्षय, प्रभु नगर	100 रुपये
89. श्री महेश चन्द्रा अतराड़ा	100 रुपये
90. श्री जगन नाथ सिंह, अतराड़ा	100 रुपये
91. श्री महेन्द्र सिंह राजपुरा	100 रुपये
92. श्रीमति नेहा एवं श्री अंकुर त्यागी, मुजफ्फर नगर	1100 रुपये
93. श्री त्रिलोक चन्द त्यागी, बिहटा, बुलन्द शहर	1100 रुपये
94. श्रीमती प्रतिभा त्यागी, मुजफ्फरपुर	301 रुपये

सभी उपरोक्त दान-दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनका परिवार सहित जीवन में सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता से प्रार्थना करती है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य संहिता, कैसेट्स, सी.डी. व डी.वी.डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरवाना, जि. बागपत, (उ. प्र.)। दूरभाष : 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। दूरभाष : 0131-2606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली। दूरभाष : 011-26498737
5. श्री सुशील त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) दूरभाष : 9412002233
7. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट-मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला जे.पी. नगर (उ.प्र.) दूरभाष : 09412139333
8. श्री विवेक त्यागी, 16, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110,-मार्किट नोएड़ा, फेस-2, (उ.प्र.) दूरभाष : 9899228860, 9871367937
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबार हरियाणा। दूरभाषः 9910589486
11. सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सेक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएड़ा, (उ.प्र.) दूरभाष : 9313530505
12. श्री पूनम त्यागी, 96-A, सेक्टर-10 नोएड़ा, (उ. प्र.)। दूरभाषः 9311528383
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेड़ी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)।
15. मैं. गोविन्द राम, हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ. प्र.)।

मासिक सहयोग

श्री हरिराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएड़ा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, वसुंधरा, गाजियाबाद	500 रुपये
डा० शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएड़ा,	125 रुपये
डा० ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़	100 रुपये
श्री राहुल शर्मा, बैंगलोर	100 रुपये
श्री पराग शर्मा, नोएड़ा	100 रुपये

चतुर्वेद ब्रह्म-पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की अनुकम्प कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की शुभ प्रेरणा व आशीर्वाद से ग्राम दान्दुपुर निवासी अपने ग्राम दान्दुपुर में शिव मन्दिर के प्रागंण में दिनाँक 27 मई 2012 से 3 जून 2012 तक चतुर्वेद ब्रह्म-पारायण महायाग का आयोजन श्री गुरुवचन शास्त्री जी के ब्रह्मतत्त्व में आयोजित कर रहे हैं। इसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक :
समस्त-दान्दुपुर निवासी

उद्‌बोधन

जब उस परमपिता परमात्मा की महिमा का, गुणों का हम वर्णन किया करते हैं तो हमें ऐसा अनुभव होने लगता है। हम उसकी छत्रछाया में, उसके आँगन में इस समय विराजमान हैं और उसकी महिमा का गुण गाते हमारा हृदय प्रसन्न हो जाता है। आओ मेरे भद्र पुरुषों! हमें उस परमपिता परमात्मा ने एक सुन्दर मार्ग दिया। जिस सुपथ का ग्रहण करने के पश्चात् हमारे हृदय में मानवीयता के पवित्र अँकुर विराजमान हो जाते हैं। आओ! हम उस पथ को ग्रहण करते चले जाएँ जो वेद से ऋषि-मुनियों ने उस परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए मार्ग प्रदर्शन किया है। हम उस सुन्दर मार्ग को अपनाते हुए अपने जीवन को विशाल हृदय, निडर और निर्भीक हो करे राष्ट्रवादी, मानववादी धर्मज्ञ होकर सब प्रकार से दूसरों की रक्षा करने वाले बनें।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(षष्टम पुष्प प्रवचन दिनाँक नवम्बर, 1966)

वर्ष 40 : अंक : 476
मई 2012

मूल्यः
पाँच रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पंजी०
के लिए नवप्रभात प्रिटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38, शिवालिक
मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 26498737

POSTED AT N.D.PS.O ON 10-5-2012